

श्री बाहुबली पूजन (श्री राजमलजी पवैया कृत) (वीर छन्द)

जयति बाहुबलि स्वामी, जय जय करूँ वंदना बारम्बार।
निज स्वरूप का आश्रय लेकर, आप हुए भवसागर पार॥
हे त्रैलोक्यनाथ त्रिभुवन में, छाई महिमा अपरम्पार।
सिद्धस्वपद की प्राप्ति हो गई, हुआ जगत में जय-जयकार॥
पूजन करने मैं आया हूँ, अष्ट द्रव्य का ले आधार।
यही विनय है चारों गति के, दुःख से मेरा हो उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

उज्ज्वल निर्मल जल प्रभु पद-पंकज में आज चढ़ाता हूँ।
जन्म-मरण का नाश करूँ, आनन्दकन्द गुण गाता हूँ॥
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभुवर, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिवसुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शीतल मलय सुगन्धित पावन, चन्दन भेंट चढ़ाता हूँ।

भव आताप नाश हो मेरा, ध्यान आपका ध्याता हूँ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम शुभ्र अखण्डित तन्दुल, हर्षित चरण चढ़ाता हूँ।

अक्षयपद की सहज प्राप्ति हो, यही भावना भाता हूँ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

काम शत्रु के कारण अपना, शील स्वभाव न पाता हूँ।

काम भाव का नाश करूँ मैं, सुन्दर पुष्प चढ़ाता हूँ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृष्णा की भीषण ज्वाला में, प्रतिपल जलता जाता हूँ।
क्षुधा-रोग से रहित बनूँ मैं, शुभ नैवेद्य चढ़ाता हूँ॥
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभुवर चरणों में शीश झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह ममत्व आदि के कारण, सम्यक् मार्ग न पाता हूँ।
यह मिथ्यात्व तिमिर मिट जाये, प्रभुवर दीप चढ़ाता हूँ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

है अनादि से कर्म बन्ध दुःखमय, न पृथक् कर पाता हूँ।
अष्टकर्म विध्वंस करूँ, अतएव सु-धूप चढ़ाता हूँ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सहज भाव सम्पदा युक्त होकर, भी भव दुःख पाता हूँ।
परम मोक्षफल शीघ्र मिले, उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्य भाव से स्वर्गादिक पद, बार-बार पा जाता हूँ।
निज अनर्घ्य पद मिला न अब तक, इससे अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥श्री. ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(वीरछन्द)

आदिनाथ सुत बाहुबलि प्रभु, मात सुनन्दा के नन्दन ।
चरम शरीरी कामदेव तुम, पोदनपुर पति अभिनन्दन ॥
छह खण्डों पर विजय प्राप्त कर, भरत चढ़े वृषभाचल पर ।
अगणित चक्री हुए नाम, लिखने को मिला न थल तिल भर ॥
मैं ही चक्री हुआ, अहं का मान धूल हो गया तभी ।
एक प्रशस्ति मिटाकर अपनी, लिखी प्रशस्ति स्व हस्त जभी ॥

चले अयोध्या किन्तु नगर में, चक्र प्रवेश न कर पाया ।
 ज्ञात हुआ लघु भ्रात बाहुबलि सेवा में न अभी आया ॥
 भरत चक्रवर्ती ने चाहा, बाहुबलि आधीन रहे ।
 ठुकराया आदेश भरत का, तुम स्वतंत्र स्वाधीन रहे ॥
 भीषण युद्ध छिड़ा दोनों भाई के मन संताप हुए ।
 दृष्टि-मल्ल-जल युद्ध भरत से करके विजयी आप हुए ॥
 क्रोधित होकर भरत चक्रवर्ती, ने चक्र चलाया है ।
 तीन प्रदक्षिणा देकर कर में, चक्र आपके आया है ॥
 विजय चक्रवर्ती पर पाकर, उर वैराग्य जगा तत्क्षण ।
 राज्यपाट तज ऋषभदेव के, समवशरण को किया गमन ॥
 धिक्-धिक् यह संसार और, इसकी असारता को धिक्कार ।
 तृष्णा की अनन्त ज्वाला में, जलता आया है संसार ॥
 जग की नश्वरता का तुमने, किया चिंतवन बारम्बार ।
 देह भोग संसार आदि से, हुई विरक्ति पूर्ण साकार ॥
 आदिनाथ प्रभु से दीक्षा ले, व्रत संयम को किया ग्रहण ।
 चले तपस्या करने वन में, रत्नत्रय को कर धारण ॥
 एक वर्ष तक किया कठिन तप, कायोत्सर्ग मौन पावन ।
 किन्तु शल्य थी एक हृदय में, भरत-भूमि पर है आसन ॥
 केवलज्ञान नहीं हो पाया, एक शल्य ही के कारण ।
 परिषह शीत ग्रीष्म वर्षादिक, जय करके भी अटका मन ॥
 भरत चक्रवर्ती ने आकर, श्री चरणों में किया नमन ।
 कहा कि वसुधा नहीं किसी की, मान त्याग दो हे भगवन् ॥
 तत्क्षण शल्य विलीन हुई, तुम शुक्ल ध्यान में लीन हुए ।
 फिर अन्तर्मुहूर्त में स्वामी, मोह क्षीण स्वाधीन हुए ॥
 चार घातिया कर्म नष्ट कर, आप हुए केवलज्ञानी ।
 जय जयकार विश्व में गूँजा, सारी जगती मुसकानी ॥

झलका लोकालोक ज्ञान में, सर्व द्रव्य-गुण-पर्यायें ।
 एक समय में भूत भविष्यत्, वर्तमान सब दर्शायें ॥
 फिर अघातिया कर्म विनाशे, सिद्ध लोक में गमन किया ।
 अष्टापद से मुक्ति हुई, तीनों लोकों ने नमन किया ॥
 महा मोक्ष फल पाया तुमने, ले स्वभाव का अवलंबन ।
 हे भगवान बाहुबलि स्वामी, कोटि-कोटि शत-शत वंदन ॥
 आज आपका दर्शन करने, चरण-शरण में आया हूँ ।
 शुद्ध स्वभाव प्राप्त हो मुझको, यही भाव भर लाया हूँ ॥
 भाव शुभाशुभ भव निर्माता, शुद्ध भाव का दो प्रभु दान ।
 निज परिणति में रमण करूँ प्रभु, हो जाऊँ मैं आप समान ॥
 समकित दीप जले अन्तर में, तो अनादि मिथ्यात्व गले ।
 राग-द्वेष परिणति हट जाये, पुण्य पाप सन्ताप टले ॥
 त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव का, आश्रय लेकर बढ़ जाऊँ ।
 शुद्धात्मानुभूति के द्वारा, मुक्ति शिखर पर चढ़ जाऊँ ॥
 मोक्ष-लक्ष्मी को पाकर भी, निजानन्द रस लीन रहूँ ।
 सादि अनन्त सिद्ध पद पाऊँ, सदा सुखी स्वाधीन रहूँ ॥
 आज आपका रूप निरख कर, निज स्वरूप का भान हुआ ।
 तुम-सम बने भविष्यत् मेरा, यह दृढ़ निश्चय ज्ञान हुआ ॥
 हर्ष विभोर भक्ति से पुलकित, होकर की है यह पूजन ।
 प्रभु पूजन का सम्यक् फल हो, कटें हमारे भव बंधन ॥
 चक्रवर्ति इन्द्रादिक पद की नहीं कामना है स्वामी ।
 शुद्ध बुद्ध चैतन्य परम पद पायें हे! अन्तर्यामी ॥
 ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 घर-घर मंगल छाये जग में वस्तु स्वभाव धर्म जानें ।
 वीतराग विज्ञान ज्ञान से, शुद्धातम को पहिचानें ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)